# MP Board Class 11 History Important Questions Chapter 5 यायावर साम्राज्य

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
किस मंगोल शासक ने फ्रांस के शासक लुई नौवें को चेतावनी दी थी ?
उत्तर:
चंगेजखान के पौत्र मोन्के ने।

प्रश्न 2.
बाटू कौन था ?
उत्तर:
बाटू चंगेज खान का पौत्र था ?

प्रश्न 3.
मंगोल साम्राज्य का संस्थापक कौन था?
उत्तर:
चंगेज खाँ।

प्रश्न 4.
चंगेज खाँ का जन्म कब हुआ था और कहाँ हुआ था ?
उत्तर:
1162 ई. के आस-पास, आधुनिक मंगोलिया में।

प्रश्न 5.
चंगेज खां का प्रारम्भिक नाम क्या था ?
उत्तर:
मुजिन।

प्रश्न 6.
मंगोलों का महानायक किसे घोषित किया गया और किसके द्वारा घोषित किया गया ?
उत्तर:
(1) चंगेज खान को
(2) मंगोल सरदारों की सभा कुरिलताई द्वारा।

प्रश्न 7.
निशापुर में कत्ले-आम का आदेश किसने दिया?
उत्तर:
चंगेज खान ने।

प्रश्न 8.
'उलुस' से क्या तात्पर्य है?
उत्तर:
'उलुस' शब्द का मूल अर्थ निश्चित भू-भाग नहीं था।

प्रश्न 9.
चंगेजखाँ के तीसरे और चौथे पुत्रों को शासन करने के लिए कौन से प्रदेश प्राप्त हुए?
उत्तर:
चंगेजखाँ के तीसरे पुत्र ओगोदेई को कराकोरम तथा चौथे पुत्र तोलोए को मंगोलिया प्राप्त हुआ।

प्रश्न 10.
गजन खान कौन था ?
उत्तर:
गजन खान चंगेज खाँ के सबसे छोटे पुत्र तोलुई का वंशज था।

प्रश्न 11.
यायावर कौन थे ?
उत्तर:
यायावर घुमक्कड़ लोग थे जो अनेक परिवारों के समूह में संगठित होते थे।

प्रश्न 12.
चीन की महान दीवार क्यों बनवाई गई थी ?
उत्तर:
मंगोलों के आक्रमणों से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए।.

प्रश्न 13.
मंगोलों के प्रमुख नेता का नाम लिखिए।
उत्तर:
चंगेज खान।

प्रश्न 14.
चंगेज खान का सैन्य संगठन किस पद्धति पर आधारित था ?
उत्तर:
स्टेपी क्षेत्र की पुरानी दशमलव पद्धति पर।

प्रश्न 15.
चीनी शासकों द्वारा मंगोलों के आक्रमणों से अपनी प्रजा की रक्षा के लिए किए गए दो उपायों का उल्लेख कीजिये ।
उत्तर:
(1) किलेबन्दी करना
(2) चीन की महान दीवार का निर्माण करवाना।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 16.
चीन की विशाल दीवार के निर्माण का कार्य कब से प्रारम्भ हुआ?
उत्तर:
तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से।

प्रश्न 17.
मंगोलिया में चंगेज खाँ की छवि का वर्णन कीजिये।
उत्तर:
मंगोलों के लिए चंगेज खाँ एक आराध्य व्यक्ति था।

प्रश्न 18.
यास या यसाक से क्या तात्पर्य है ?
उत्तर:
यास्क का अर्थ था-विधि, आज्ञप्ति व आदेश। यह चंगेज खाँ की विधि-संहिता थी। यसाक का सम्बन्ध प्रशासनिक विनियमों से है जैसे आखेट, सैन्य और डाक प्रणाली का संगठन।

प्रश्न 19.
चंगेज खाँ ने बुखारा पर कब विजय प्राप्त की ?
उत्तर:
1220 ई. में।

प्रश्न 20.
चंगेज खाँ का कौनसा पोता किसानों और नगरों का रक्षक था ?
उत्तर:
कुबलई खान।

प्रश्न 21.
'बर्बर' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
'बर्बर' शब्द यूनानी भाषा के 'बारबरोस' शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका तात्पर्य गैर-यूनानी लोगों से है। ये लोग क्रूर एवं निर्दयी होते थे।

प्रश्न 22.
मंगोल शासक मोन्के ने फ्रांस के शासक लुई नौवें को क्या चेतावनी दी थी ?
उत्तर:
"स्वर्ग में केवल एक शाश्वत आकाश है और पृथ्वी का केवल एक अधिपति चंगेज खान है। अतः वह मंगोलों पर आक्रमण न करे।"

प्रश्न 23.
बाटू की दो सैनिक उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
(1) उसने अपने 1236-1241 के अभियानों में रूस की भूमि को मास्को तक रौंद डाला।
(2) उसने पोलैण्ड, हंगरी तथा आस्ट्रिया पर विजय प्राप्त की।

प्रश्न 24.
चंगेजखान ने 1220 में बुखारा को जीत कर वहाँ के व्यापारियों को क्या
चेतावनी दी थी ?
उत्तर:
चंगेजखान ने बुखारा के व्यापारियों से कहा था कि "तुमने अनेक पाप किए हैं। ईश्वर ने मुझे तुम्हें दण्ड देने के लिए तुम्हारे पास भेजा है। "

प्रश्न 25.
मंगोल कौन थे ?
उत्तर:
मंगोल विविध जन-समुदाय का एक निकाय था । ये लोग पूर्व के तातार, खितान तथा मंचू लोगों से सम्बन्धित थे।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
यायावर साम्राज्य से आपका क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
यायावर साम्राज्य – यायावर साम्राज्य की अवधारणा विरोधात्मक प्रतीत
होती है। यह तर्क दिया जा सकता है कि यायावर लोग मूलतः घुमक्कड़
होते हैं तथा ये सापेक्षिक तौर पर एक अविभेदित आर्थिक जीवन और प्रारंभिक राजनीतिक संगठन के साथ परिवारों के समूहों में संगठित होते हैं। दूसरी ओर, साम्राज्य शब्द भौतिक अवस्थितियों को दर्शाता है। साम्राज्य ने जटिल सामाजिक-आर्थिक ढाँचे में स्थिरता प्रदान करने की और एक सुपरिष्कृत प्रशासनिक व्यवस्था के द्वारा एक व्यापक भू-भागीय प्रदेश में सुचारु रूप से शासन प्रदान किया गया। यहाँ यायावर साम्राज्य से आशय मध्य एशिया के मगोल यायावर लोगों द्वारा 13वीं तथा 14वीं शताब्दी में चंगेज खां के नेतृत्व में स्थापित पारद्वीपीय साम्राज्य से है।

प्रश्न 2.
'बर्बर' शब्द की व्याख्या कीजिए।
उत्तर:
'बर्बर' शब्द यूनानी भाषा के 'बारबरोस' शब्द से उत्पन्न हुआ है। जिसका तात्पर्य गैर-यूनानी लोगों से है जिनकी भाषा यूनानियों को बेतरतीब शोर 'बर-बर' के समान लगती थी। यूनानी पुस्तकों में बर्बरों को बच्चों की भाँति प्रदर्शित किया गया है जो अच्छी तरह से बोलने या सोचने में असमर्थ, कायर, विलासी, क्रूर, आलसी, लालची, स्त्री-लोलुप तथा स्व-शासन का संचालन करने में असमर्थ थे। यह रूढ़िगत धारणाएँ रोमवासियों को प्राप्त हुईं। रोमवासियों ने बर्बर शब्द का प्रयोग, जर्मन जनजातियों गाल और हूण जैसे लोगों के लिए किया। चीनियों ने स्टेपी क्षेत्र के बर्बरों के लिए दूसरे शब्दों का प्रयोग किया, परन्तु उनमें से किसी भी शब्द के सकारात्मक अर्थ नहीं थे।

प्रश्न 3.
"चंगेज़ख़ान की राजनैतिक दूरदर्शिता मध्य- एशिया के स्टेपी- प्रदेश मंगोल जातियों का एक महासंघ मात्र बनाने से कहीं अधिक दूरगामी थी। " स्पष्ट कीजिए। उसके वंशजों ने चंगेजखान के स्वप्न को कैसे साकार किया?
उत्तर:
चंगेजखान का विश्वास था कि उसे ईश्वर से विश्व पर शासन करने का आदेश मिला था। यद्यपि उसका अपना जीवन मंगोल जातियों पर अधिकार करने तथा साम्राज्य से लगे हुए क्षेत्र जैसे उत्तरी चीन, तूरान, अफगानिस्तान, पूर्वी ईरान, रूसी स्टेपी प्रदेशों के विरुद्ध सैनिक अभियानों का संचालन करने में व्यतीत हुआ, फिर भी उसके वंशजों ने

https://www.evidyarthi.in/

इस क्षेत्र से आगे बढ़कर चंगेज खान के स्वप्न को पूरा किया एवं विश्व के सबसे विशाल साम्राज्य की स्थापना की। चंगेजखान की महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के उद्देश्य से उसके एक दूसरे पौत्र बाटू ने 1236-1241 की अवधि में सैनिक अभियान करते हुए रूस की भूमि को मास्को तक रौंद डाला और पोलैण्ड, हंगरी पर विजय प्राप्त करता हुआ वियना तक पहुँच गया। चीन के अधिकांश भाग, मध्य-पूर्व एशिया तथा यूरोप यह मानने लगे कि चंगेजखान की विश्व पर विजय 'ईश्वर का क्रोध' है और यह कयामत के दिन की शुरुआत है।

प्रश्न 4.
1220 में चंगेजखान की बुखारा – विजय का फारसी इतिहासकार जुवैनी ने क्या विवरण प्रस्तुत किया है?
उत्तर:
परवर्ती तेरहवीं शताब्दी के ईरान के मंगोल शासकों के एक फारसी इतिहासकार जुनैनी ने 1220 ई. में चंगेज खाँ की बुखारा – विजय का वृत्तान्त दिया है। उसने लिखा है कि बुखारा नगर की विजय के बाद चंगेजखान उत्सव मैदान में गया और वहाँ पर एकत्रित धनी व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि, " अरे लोगो ! तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि तुम लोगों ने अनेक पाप किए हैं और तुम में से जो अधिक सम्पन्न लोग हैं, उन्होंने सबसे अधिक पाप किए हैं।

यदि तुम मुझसे पूछो कि इसका मेरे पास क्या प्रमाण है, तो इसके लिए मैं कहूँगा कि मैं ईश्वर का दण्ड हूँ । यदि तुमने पाप न किए होते, तो ईश्वर ने मुझे दण्ड हेतु तुम्हारे पास न भेजा होता।" जुवैनी के अनुसार बुखारा पर अधिकार होने के बाद कोई व्यक्ति खुरासान भाग गया था। जब वहाँ के लोगों ने उस व्यक्ति से बुखारा नगर के भाग्य के विषय में पूछा तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "वे (मंगोल) नगर में आए, दीवारों को ध्वस्त कर दिया, जला दिया, लोगों की हत्या की, उन्हें लूटा और चल दिए।"

प्रश्न 5.
मंगोल कौन थे?
उत्तर:
मंगोल – मंगोल विविध जनसमुदाय का एक निकाय था। ये लोग पूर्व में तातार, खितान और मंचू लोगों से और पश्चिम में तुर्की कबीलों से भाषागत समानता के कारण परस्पर सम्बद्ध थे। कुछ मंगोल पशुपालक थे और कुछ शिकारी संग्राहक थे। ये लोग यायावर लोग थे। उनका यायावरीकरण मध्य एशिया की चारण भूमि (स्टेपीज) में हुआ और शिकारी- संग्राहक लोग पशुपालकों के आवास क्षेत्र के उत्तर में साइबेरियायी वनों में रहते थे।

प्रश्न 6.
मंगोल कबीलों की मुख्य विशेषताएँ लिखिये।
उत्तर:
मंगोल कबीलों की मुख्य विशेषताएँ –
(i) मंगोल कबीले नृजातीय और भाषायी संबंधों के कारण परस्पर. जुड़े हुए थे। परन्तु उपलब्ध आर्थिक संसाधनों के अभाव के कारण उनका समाज अनेक पितृवंशीय वंशों में विभाजित था।
(ii) मंगोल कबीलों में धनी परिवार विशाल होते थे। उनके पास अधिक संख्या में पशु और चारण भूमि होती थी। स्थानीय राजनीति में उनका दबदबा था। इसलिए उनके अनेक अनुयायी होते थे।
(iii) समय-समय पर आने वाली आपदाओं- भीषण शीत ऋतु या वर्षा का न होना आदि-के कारण इन्हें. चरागाहों की खोज में भटकाना पड़ता था। इस दौरान उनमें संघर्ष होता था और वे पशुधन प्राप्त करने हेतु लूटपाट भी करते थे।

(iv) प्रायः परिवारों के समूह आक्रमण करने और अपनी रक्षा करने हेतु अधिक शक्तिशाली और सम्पन्न कुलों से मित्रता कर लेते थे और परिसंघ बना लेते थे।
(v) मंगोल कबीलों में कुछ पशुपालक थे और कुछ शिकारी-संग्राहक। इन्होंने कृषि कार्य नहीं अपनाया था।

प्रश्न 7.
मंगोल परिसंघ पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
मंगोल परिसंघ – मंगोलों ने अपने परिसंघ बना लिए थे। प्रायः ये परिसंघ बहुत छोटे तथा अल्पकालिक होते थे। चंगेज खान ने मंगोल तथा तुर्की कबीलों को मिलाकर एक परिसंघ बनाया था जो पाँचवीं शताब्दी के अट्टीला द्वारा बनाए गए परिसंघ के बराबर था। अट्टीला द्वारा बनाए गए परिसंघ के विपरीत चंगेजखान की राजनीतिक व्यवस्था बहुत अधिक स्थायी रही और चंगेजखान की मृत्यु के बाद भी यह व्यवस्था बनी रही। यह परिसंघ व्यवस्था इतनी सुदृढ़ और स्थायी थी कि यह चीन, ईरान और पूर्वी यूरोपीय देशों की उन्नत शस्त्रों से सुसज्जित विशाल सेनाओं का मुकाबला करने में सक्षम थी। मंगोलों ने इन क्षेत्रों में नियन्त्रण स्थापित किया तथा जटिल कृषि अर्थव्यवस्थाओं एवं नगरीय आवासों वाले स्थानबद्ध समाजों का कुशलतापूर्वक प्रशासन किया। मंगोलों के अपने सामाजिक अनुभव तथा रहन-सहन के तरीके इनसे बिल्कुल ही अलग थे।

प्रश्न 8.
मंगोलों के काल में स्टेपी क्षेत्रों में कोई नगर क्यों नहीं स्थापित हो पाया?
उत्तर:
मंगोल विविध प्रकार के लोगों का जनसमुदाय था। ये लोग मूलतः घुमक्कड़ थे। मंगोलों में कुछ लोग पशुपालक थे, तो कुछ लोग शिकारी-संग्राहक थे। इन्होंने कृषि व्यवस्था को नहीं अपनाया था। इनकी पशुपालन और शिकार – संग्राहक अर्थव्यवस्थाएँ भी घनी आबादी के भरण-पोषण में असमर्थ थीं। यही कारण था कि उनके काल में कोई भी नगर स्थापित नहीं हो सका।

प्रश्न 9.
मंगोलों के चीन के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
मंगोलों के चीन के साथ व्यापारिक सम्बन्ध-स्टेपी क्षेत्र में संसाधनों की कमी के कारण मंगोलों को व्यापार एवं वस्तु-विनिमय के लिए चीन के लोगों के पास जाना पड़ता था । यह व्यवस्था दोनों पक्षों के लिए लाभदायक थी। मंगोल खेती से प्राप्त उत्पादों तथा लोहे के उपकरणों को चीन से लाते थे और घोड़े, फर और शिकार का विनिमय करते थे।

व्यापारिक गतिविधियों के कारण दोनों पक्षों में तनावपूर्ण वातावरण बना रहता था, क्योंकि दोनों पक्ष अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से एक-दूसरे के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही कर बैठते थे। व्यापार करते समय मंगोल, चीनी लोगों को व्यापार में उत्तम शर्तें रखने के लिए विवश कर देते थे। कभी-कभी ये लोग व्यापारिक सम्बन्धों की परवाह न करते हुए केवल लूटपाट करने लगते थे। मंगोल लूटपाट कर संघर्ष – क्षेत्र से दूर भाग जाते थे जिससे उन्हें बहुत कम हानि होती थी।

प्रश्न 10.
चंगेजखान की सैनिक सफलताओं के कारणों की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
(1) मंगोलों और तुर्कों के घुड़सवारी कौशल ने चंगेजखान की सेना को गति प्रदान की थी।

https://www.evidyarthi.in/

(2) घोड़े पर सवार होकर मंगोल सैनिकों की तीरन्दाजी का कौशल अद्‌भुत था। उनकी इस तीरन्दाजी ने उनकी सैनिक गति को बहुत तेज़ कर दिया था।
(3) स्टेपी- क्षेत्र के घुड़सवार सदैव फुर्तीले रहते थे तथा बड़ी तीव्र गति से यात्रा करते थे।
(4) मंगोलों को अपने आसपास के क्षेत्रों तथा मौसम की जानकारी हो गई थी । इसने उन्हें सफल सैनिक अभियान करने की क्षमता प्रदान की क्योंकि मंगोल अपने अभियान शीत ऋतु में प्रारंभ करते थे। वे शत्रु के शिविरों और नगरों में प्रवेश करने के लिए बर्फ से जमी हुई नदियों का प्रयोग राजमार्गों की तरह करते थे।
(5) चंगेज खान को पता था कि घेराबंदी – यंत्र और नेफ्था बमबारी के अभाव में प्राचीरों से आरक्षित किलों पर विजय प्राप्त करना दुष्कर था। अतः उसने अपनी सैन्य टुकड़ियों को इनके प्रयोग में कुशल बनाया।
(6) चंगेजखान के इन्जीनियरों ने उसके शत्रुओं के विरुद्ध अभियानों में प्रयोग के लिए हल्के चल-उपस्करों का निर्माण किया। ये चल – उपस्कर शत्रुओं के लिए घातक सिद्ध हुए।

प्रश्न 11.
‘उलुस’ से क्या तात्पर्य है? उलुस का गठन किस प्रकार हुआ ?
उत्तर:
उलुस से तात्पर्य – उलुस शब्द का मूल अर्थ निश्चित भू-भाग नहीं था। इस भू-भाग में परिवर्तन होता रहता था। चंगेजखान अभी भी निरन्तर विजय प्राप्त करने तथा साम्राज्य का अधिक से अधिक विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील था। इस साम्राज्य की सीमाएँ अत्यन्त परिवर्तनशील थीं।
चार उलुस – चंगेजखान ने अपने नव – विजित लोगों पर शासन करने का उत्तरदायित्व अपने चार पुत्रों को सौंप दिया। इससे ‘उलुस’ का गठन हुआ। ये चार उलुस थे-
(1) चंगेजखान के सबसे बड़े पुत्र जोची को रूसी स्टेपी- प्रदेश प्राप्त हुआ। परन्तु उसकी दूरस्थ सीमा अर्थात् उलुस निर्धारित नहीं थी।
(2) चंगेजखान के दूसरे पुत्र चघताई को तूरान का स्टेपी- क्षेत्र तथा पामीर के पहाड़ का उत्तरी क्षेत्र प्राप्त हुआ था।
(3) चंगेजखान ने संकेत दिया था कि उसका तीसरा पुत्र ओगोदेई उसका उत्तराधिकारी होगा और उसे ‘महान खान’ की उपाधि प्रदान की जाएगी। ओगोदेई ने अपने राज्याभिषेक के बाद अपनी राजधानी कराकोरम में स्थापित की था।
(4) चंगेजखान के सबसे छोटे पुत्र तोलोए ने अपनी पैतृक भूमि मंगोलिया को प्राप्त किया।
चंगेजखान चाहता था कि उसके पुत्र परस्पर मिलजुल कर साम्राज्य का शासन करें। अतः उसने राजकुमारों के लिए अलग-अलग सैनिक टुकड़ियाँ नियुक्त कर दीं जो प्रत्येक उलुस में तैनात रहती थीं।

प्रश्न 12.
चंगेजखान की हरकारा पद्धति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
चंगेजखान की हरकारा पद्धति – चंगेजखान ने एक फुर्तीली हरकारा पद्धति (संचार पद्धति) अपना रखी थी जिससे राज्य के दूर-दूर के स्थानों में परस्पर सम्पर्क बना रहता था। हरकारा पद्धति के सफल संचालन के लिए अपेक्षित दूरी पर सैनिक चौकियाँ स्थापित की गई थीं। इन चौकियों में स्वस्थ और शक्तिशाली घोड़े तथा घुड़सवार सन्देशवाहक नियुक्त रहते थे। इस संचार पद्धति के संचालन के लिए मंगोल यायावर अपने पशु-समूहों से घोड़े अथवा अन्य पशुओं का दसवाँ भाग देते थे। इसे ‘कुबकुर कर’ कहते थे। यायांवर लोग इस कर को अपनी इच्छा से देते थे जिससे उन्हें अनेक लाभ मिलते थे। चंगेजखान की मृत्यु के बाद इस हरकारा पद्धति में और भी सुधार किये गए। इस संचार पद्धति से महान खानों को अपने विस्तृत महाद्वीपीय साम्राज्य के सुदूर स्थानों में होने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त हो जाती थी।

प्रश्न 13.
विजित लोगों को अपने नवीन यायावर शासकों से लगाव क्यों नहीं था? इसके क्या परिणाम हुए?
उत्तर:
विजित लोगों का अपने नवीन यायावर शासकों से लगाव न होना – विजित लोगों को अपने नवीन मंगोल यायावर शासकों से कोई लगाव नहीं था। इसके निम्नलिखित कारण थे –
(1) मंगोलों ने विजित क्षेत्रों में लूटमार तथा विध्वंस की नीति अपनाई थी।
(2) तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुए युद्धों में अनेक नगर नष्ट कर दिए थे।
(3) कृषि भूमि को काफी हानि हुई, फसलें नष्ट हो गईं।
(4) व्यापार चौपट हो गया तथा शिल्प उद्योगों को प्रबल आघात पहुँचा।
(5) इन युद्धों में हजारों लोग मारे गये और इससे भी अधिक लोग दास बना लिए गए।
इस प्रकार मंगोलों की लूटमार तथा विध्वंस की नीति से संभ्रान्त लोगों से लेकर कृषक वर्ग तक समस्त लोगों को भारी कष्टों का सामना करना पड़ा।

परिणाम –
(1) मंगोलों के निरन्तर धावों तथा लूटमार की नीति से राज्य में अस्थिरता फैल गई। इस अस्थिरता से ईरान के शुष्क पठार में भूमिगत नहरों का मरम्मत का कार्य नियमित रूप से न हो सका।
(2) नहरों की मरम्मत न होने से मरुस्थल फैलने लगा जिससे बहुत बड़ा पारिस्थितिक विनाश हुआ।

प्रश्न 14.
तेरहवीं शताब्दी में मंगोल साम्राज्य में यायावरों और स्थानबद्ध समुदायों में संघर्ष कम होने से क्या परिणाम हुए?
उत्तर:
तेरहवीं शताब्दी में मंगोल साम्राज्य में यायावरों और स्थानबद्ध समुदायों में संघर्ष कम होते गए। इससे कृषि को प्रोत्साहन मिला। उदाहरण के लिए, 1230 ई. के दशक में जब मंगोलों ने उत्तरी चीन के चिन वंश के विरुद्ध युद्ध में विजय प्राप्त की, तो मंगोल नेताओं के एक क्रुद्ध वर्ग ने यह विचार प्रकट किया कि समस्त कृषकों का वध कर दिया जा तथा उनकी कृषि भूमि को चरागाह में बदल दिया जाए । परन्तु 1270 के दशक के आते-आते शुंग वंश को पराजित करने के बाद दक्षिण चीन को मंगोल – साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। इस अवसर पर चंगेजखान का पौत्र कुबलई खान कृषकों और नगरों के रक्षक के रूप में प्रकट हुआ। चंगेज़खान के सबसे छोटे पुत्र तोलूई के वंशज गज़नखान ने अपने परिवार के सदस्यों और अन्य सेनापतियों को आदेश दिया था कि वे कृषकों को न लूटें। एक बार अपने भाषण के दौरान उसने कहा था कि कृषकों को सताने और लूटने से राज्य में स्थायित्व और समृद्धि नहीं आती। मंगोलों के इस नवीन दृष्टिकोण से कृषि की उन्नति को प्रोत्साहन मिला।

प्रश्न 15.
मंगोल वंश पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
मंगोल वंश-चंगेजखान के अनेक बच्चे थे। उनकी पटरानी बोरेत ने चार पुत्रों को जन्म दिया जिन्होंने उनके वंश को आगे बढ़ाया।
(1) उनके ज्येष्ठ पुत्र जोची के परिवार में कोई भी शूरवीर (प्रसिद्ध खान) उत्पन्न नहीं हुआ, परन्तु उस परिवार के पास अपार शक्ति थी।
(2) गोमुक की मृत्यु के बाद जोची के पुत्र बातू ने ओगोदेई के वंश को समर्थन देने से इनकार कर दिया। इसके परिणामस्वरूप शक्ति तोलुई परिवार के हाथों में आ गई जिससे मोन्के और कुबलई के लिए सत्ता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 16.
अपने यायावर सेनापतियों को गजन खान द्वारा दिए गए भाषण का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
गजनखान का भाषण – गजनखान (1295-1304) चंगेजखान के सबसे छोटे पुत्र तोलुई का वंश था। उसने अपने मंगोल-तुर्की यायावर सेनापतियों के सामने निम्न भाषण दिया "मैं फारस के कृषक वर्ग के पक्ष में नहीं हूँ। यदि उन सबको लूटने का कोई उद्देश्य है, तो ऐसा करने के लिए मेरे से अधिक शक्तिशाली और कोई नहीं है। चलो हम सब मिलकर उन्हें लूटते हैं। परन्तु यदि आप निश्चित रूप से भविष्य में अपने भोजन के लिए अनाज और भोज्य सामग्री इकट्ठा करना चाहते हैं, तो मुझे आपके साथ कठोर होना पड़ेगा। आपको तर्क और बुद्धि से काम लेना सिखाना पड़ेगा। यदि आप कृषकों का अपमान करेंगे, उनसे उनके बैल और अनाज के बीज छीन लेंगे और उनकी फसलों को कुचल डालेंगे, तो आप भविष्य में क्या करेंगे? एक आज्ञाकारी कृषक वर्ग तथा एक विद्रोही कृषक वर्ग में अन्तर समझना आवश्यक है। "

प्रश्न 17.
मंगोलों के विजित राज्यों से भर्ती किए गए नागरिक प्रशासकों की भूमिका की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
चंगेजखान के शासन काल से ही मंगोलों ने विजित राज्यों से नागरिक प्रशासकों को अपने यहाँ भर्ती करना शुरू कर दिया था। इन प्रशासकों की भूमिका इस प्रकार रही –
(i) इन्होंने दूरस्थ राज्यों को संगठित करने में सहायता की।
(ii) इन नागरिक प्रशासकों के प्रभाव से खानाबदोश लोगों की स्थानबद्ध क्षेत्र में की जाने वाली लूटमार में भी कमी आई।
(iii) इनमें से कुछ प्रशासक काफी प्रभावशाली थे और अपने प्रभाव का उपयोग मंगोल खानों पर भी करते रहते थे । उदाहरण के लिए, 1230 के दौरान चीनी मन्त्री ये-लू – चुत्साई ने ओगोदेई की लूटमार की प्रवृत्ति को बदल दिया था। जुवैनी परिवार ने भी ईरान में तेरहवीं शताब्दी में और उसके अन्त में इसी प्रकार की भूमिका निभाई थी। ईरान के वजीर रशीदुद्दीन ने मंगोल – शासक गजनखान के लिए वह भाषण लिखा था जो उसने अपने मंगोल सेनापतियों के सामने दिया था । इस भाषण में गजनखान ने कृषक वर्ग को सताने की बजाय, उनकी रक्षा करने की सलाह दी थी।

प्रश्न 18.
13वीं सदी में चंगेजखान के वंशज पृथक्-पृथक् वंश समूहों में किस
प्रकार बँट गए?
उत्तर:
तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक भाइयों द्वारा पिता के धन को मिल-बाँट कर उपयोग करने की बजाय व्यक्तिगत राजवंश बनाने की भावना प्रबल हो गई। प्रत्येक राजवंश अपने 'उलुस' (अधिकृत क्षेत्र) का स्वामी हो गया । यह कुछ अंशों तक उत्तराधिकार के लिए संघर्ष का परिणाम था जिसमें चंगेजखान के वंशजों के बीच 'महान' पद के लिए तथा श्रेष्ठ चरागाही भूमि प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्द्धा होती थी। चीन और ईरान दोनों पर शासन करने के लिए आए तोलुई के वंशजों ने युआन तथा इल- खानी वंशों की स्थापना की। जोची ने 'सुनहरा गिरोह' का गठन किया और रूस के स्टेपी क्षेत्रों पर शासन किया। चघताई के उत्तराधिकारियों ने तूरान के स्टेपी- क्षेत्रों पर राज किया। इसे आजकल तुर्किस्तान कहा जाता है।

प्रश्न 19.
चंगेज खाँ के वंशजों का धीरे-धीरे अलग होकर पृथक्-पृथक् वंश-समूहों में बँट जाना किस बात का प्रतीक था ?
उत्तर:

चंगेज खान के वंशजों का धीरे-धीरे अलग होकर पृथक्-पृथक् वंश – समूहों में बँट जाने का मतलब था कि उनका अपने पिछले परिवार से जुड़ी स्मृतियों और परम्पराओं के सामंजस्य में परिवर्तन आना। यह सब एक कुल के सदस्यों में परस्पर होड़ के परिणामस्वरूप हुआ था। यह सब चीन और ईरान पर उनके प्रभुत्व का तथा उनके परिवार के सदस्यों द्वारा विद्वानों को अपने दरबार में संरक्षण देने का परिणाम था। अतीत से अलग होने का कारण यह था कि चंगेज खान के वंशज महान खानों की अपेक्षा अपने गुणों का प्रदर्शन करना चाहते थे।

इल-खानी ईरान में तेरहवीं शताब्दी के अन्त में फारसी इतिहासवृत्त में महान खानों द्वारा की गईं रक्तरंजित हत्याओं का विस्तृत विवरण मिलता है। इसमें मृतकों की संख्या बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई है। चंगेज खान के वंशजों को उत्तराधिकार में जो कुछ मिला, वह महत्त्वपूर्ण था परन्तु उनके सामने एक समस्या यह थी कि एक स्थानबद्ध समाज में अपनी धाक किस प्रकार स्थापित की जाए। इस बदली हुई परिस्थिति में वे वीरता का वह चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकते थे, जैसा चंगेजखान ने किया था।

प्रश्न 20.
‘नोयान’ से आप क्या समझते हैं ?
उत्तर:
चंगेज खान एक महान योद्धा एवं कुशल सेनापति था। उसकी सेना पुरानी दशमलव पद्धति के अनुसार गठित की गई थी जो दस सौ हजार और लगभग दस हजार सैनिकों की इक़ाई में विभाजित थी। चंगेजखान ने इस पद्धति को समाप्त करके मंगोलों को नई सैनिक इकाइयों में बाँट दिया। इन नई सैनिक टुकड़ियों को, जो उसके चार पुत्रों के अधीन थीं और विशेष रूप से चयनित कप्तानों के अधीन कार्य करती थी, ‘नोयान’ कहा जाता था। इस नई व्यवस्था में चंगेज खाँ के अनुयायियों का वह समूह भी सम्मिलित था, जिन्होंने संकटपूर्ण परिस्थितियों में भी निष्ठापूर्वक चंगेज खाँ का साथ दिया था।

https://www.evidyarthi.in/